[श्री शरद पवार]

कर सकती। मगर यह अहिंसा की भाषा, हमले की भाषा या जवाब देने की भाषा का आधार चाहिए। इस बारे में धैर्य से सोचने की आवश्यकता है। परिस्थिति का अभ्यास गम्भीरता से करने की आवश्यकता है और फिर समझदारी से सोचकर इस पर हम लोगों को कदम उठाने होंगे। मैं इस सदन की तरफ से सरकार को कहना चाहता हूं कि देश के हितों की रक्षा करने के लिए जो कुछ कदम आप उठायेंगे, उन पर आपको हम सबका सहयोग मिलेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपसे इजाजत लेता हूं।

[अनुवाद]

श्रीमती सोनिया गांधी (अमेठी): महोदया, यह सत्र 13 दिसंबर को हुए कायरतापूर्ण हमले के कारण हमारे संसदीय इतिहास में दर्ज किया जायेगा। यह हमला इस भव्य इमारत संसद भवन पर ही नहीं अपितु हमारे संसदीय लोकतंत्र के प्रतीक और हमारे द्वारा संजोए गए उन सभी मूल्यों के प्रतीक इस भव्य संस्था पर किया गया हमला था। हमारा पड़ोसी देश कभी इस लोकतंत्र शब्द का अर्थ नहीं समझ सकता। हमारा पड़ोसी देश कभी भी ऐसी संस्था होने का गर्व नहीं कर सकता। कई बार, जब लोकतंत्र स्थापित करने का प्रयास किया तो हमेशा ही उन प्रयासों को सैन्य कार्रवाई द्वारा कुचल दिया गया। हम इस सभा में तथा इस सभा के बाहर संसद के सुरक्षा विभाग अर्धसैनिक बलों और दिल्ली पुलिस के उन सभी कर्मियों के आभारी हैं और उन्हें सलामी देते हैं, जिन्होंने उस भयानक दिन अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए प्राण-न्यौछावर कर दिए।

इस सरकार और विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े हम सभी सदस्यों का यह कर्त्तव्य है कि हम यह सुनिश्चित करें कि उनके परिवारों को वह सहायता मिले जो एक कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से उन्हें मिलनी चाहिए।

महोदया, 13 दिसंबर को हुई यह घटना इस देश और यहां के लोगों की सुरक्षा से संबंधित अनेक मुद्दों का खुलासा करती है। मैं आशा करती हूं कि सरकार इस मामले पर विचार करेगी और देश को उन कारणों से अवगत करायेगी जिनके रहते निःसंदेह पूर्व सूचना होने के बावजूद भी, आतंकवादी बिना अड़चन के सारी तैयारियां कर सके और संसद भवन परिसर में घुसकर वास्तव में संसद भवन के दरवाजे पर हमला करने का दुस्साहस कर सके।

पूर्वाह्न 11.45 बजे

[**अध्यक्ष महोदय** *पीठासीन* हुए]

मुझे इस बात का खेद है कि इस घटना के संबंध में सरकार का वक्तव्य किसी नई जानकारी देने के बजाय स्पष्टतः खामियों से परिपूर्ण है। यह स्पष्ट है कि संसद और अन्य अनेक संवेदनशील स्थानों पर सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की जाये और उसका पुनर्गठन किया जाये।

महोदय, ऐसी विकट स्थिति में समय का तकाजा यह है कि सरकार तथा सभी राजनीतिक दलों को दलगत भावनाओं से ऊपर उठना चाहिए। आज सभी संबद्ध लोगों को हमारी बहुजातीय समाज को विभाजित करने वाले विवादित मुद्दों को उठाने के लिए इस अवसर का प्रयोग करने से बचना चाहिए। यह ऐसा क्षण है जबकि संपूर्ण देश को भ्रातृभाव का परिचय देते हुए एकजुट हो जाना चाहिए। एकता की भावना उत्पन्न करना सरकार की जिम्मेदारी है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार को आश्वासन देना चाहती हूं कि कांग्रेस पार्टी आज राष्ट्र की एकता को खंडित करने की धमकी देने वाले आतंकवादियों को पकड़ने और उन पर मुकदमा चलाने में सरकार का समर्थन करेगी। हम यह भी मानते हैं कि सरकार को अन्य सभी राजनीतिक दलों से संपर्क साधना चाहिए और उनसे परामर्श करना चाहए। सामरिक महत्व के संवेदनशील मुद्दों पर विचार करते समय उसके सभी अच्छे बुरे पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है।

अंततः, हम यह महसूस करते हैं कि इस समय विश्वमत को अपने पक्ष में करने के लिए और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। चूंकि हम इतने वर्षों से आतंकवाद का शिकार बने रहे हैं, जिसकी चरम परिणति निशंदेह 13 दिसम्बर की भयानक घटना थी, अतः, हमें निश्चित रूप से संगठित और कूटनीतिक आक्रामक रवैया अपनाना चाहिए और देश के औचित्यपूर्ण कदम के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का पूर्ण समर्थन जुटाना चाहिए।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, सदन ऐसे विषय पर चर्चा कर रहा है जिसको लेकर पक्ष और प्रतिपक्ष की विभाजक रेखाएं धुल जाती हैं, मिट जाती हैं, धुंधली तो कम से कम पड़ ही जाती हैं। इस स्थिति में जो न पक्ष में हैं, न विपक्ष में हैं, निष्पक्ष हैं, उनकी भूमिका ऐसी होनी चाहिए जो देश को सही दिशा दे, देश के मनोबल को बढ़ाए।

मुझे कल चंद्र शेखर जी का भाषण सुन कर महाभारत के मैदान में खड़े हुए अर्जुन की याद आ गई। युद्ध हो या न हो- यह प्रश्न नहीं है। किन परिस्थितियों में युद्ध होगा, होना चाहिए, क्या उसकी जरूरत भी है या नहीं-यह चर्चा का विषय है। कोई देश में युद्ध नहीं चाहता।

मैंने एक कविता लिखी थी 'जंग न होने देंगे' लेकिन उसी के बाद कारगिल की जंग हो गई। अगर देश तैयार न होता और केवल 'जंग न होने देंगे', इसी कविता में खो जाता, तो देश के साथ हम बड़ा अन्याय करते। हम वहां शान्ति का संदेश लेकर गए थे लेकिन सफलता नहीं मिली। अब कहा जाता है कि आप गए क्यों। बड़ी मुश्किल है-न जाएं तो कहते हैं कि आप जातें क्यों नहीं और जाएं तो कहते हैं कि आप गए क्यों। लेकिन इस चर्चा में सकारात्मक दृष्टिकोण उपस्थिति किया गया है।

मैं सभी दलों के नेताओं को धन्यवाद देना चाहता हूं। जैसा मैंने शुरू में कहा, यह समय ऐसा नहीं है कि हम एक लकीर पीटते जाएं। सब मिल कर रास्ता निकालें, इस बात की आवश्यकता है। यह प्रयास होता रहा है कि सबसे चर्चा हो। अब संसद से जुड़ी हुई घटनाएं जिस तरह से घटीं, उनके बारे में जब तक पूरी जानकारी इकट्ठी नहीं हो जाती, सरकार और प्रशासन उस काम में लगा था, तब तक जो कुछ मीडिया में आ रहा था, जो कुछ समाचार पत्रों में आ रहा था, उससे अधिक और कोई जानकारी नहीं थी। इसीलिए सर्वदलीय बैठक बुलाने का जो विचार हमेशा कार्यान्वित किया जाता है, उसमें देर हुई। उसके बाद छुट्टियां थीं, लेकिन सम्पर्क बना रहा। गृह मंत्री जी इस संबंध में विस्तार से प्रकाश डालेंगे। सदन के सामने सचमुच एक गंभीर परिस्थिति है। अभी तक आतंकवाद मोटे तौर पर जम्मू कश्मीर तक सीमित था। अब उसने संसद भवन की चौखट को खटखटाया है। हम बधाई दे रहे हैं सुरक्षा बल के उन जवानों को, वाच एंड वार्ड के जवानों को, जिन्होंने प्राणों की बलि चढ़ा कर संसद भवन की रक्षा की।

आतंकवादी यहां तक कैसे पहुंचे, यह जांच का विषय है। इसको गहराई में जाकर देखना होगा, लेकिन इस कारण हमारे प्रशासन ने, हमारे सुरक्षा बल ने और संसद के वॉच एंड वार्ड ने जो बलिदान दिया, जो त्याग किया और जिस तरह की दृढ़ता दिखाई, उसका मूल्यांकन कम नहीं होना चाहिए। मैं नहीं समझता कि सदन में किसी के मन में यह भावना है कि जो भी घटना हुई है, उसका राजनैतिक लाभ कैसे उठाया जाये।

जैसा मैंने प्रारम्भ में कहा कि यह राजनीति का वक्त नहीं है, राष्ट्र के अस्तित्व को चुनौती दी गई है, हमारी अस्मिता को ललकारा गया है। संसद भवन क्यों, देश में और भी स्थान हैं। सोच-समझ कर संसद भवन को चुना गया, क्योंकि जो आतंकवादी हैं, वे भी समझते हैं कि गणतंत्र भारत का हृदय यह संसद है तथा सारे देश का प्रतिनिधित्व करती है, जो देश की एकता की धुरी है, जो लोकतंत्र की गारंटी है, जो सब को साथ लेकर चलने का एक महान प्रयत्न है, इस पर प्रहार करो। यह काम सोच-समझ कर किया गया है। मैं नहीं समझता कि यह अनायास हुआ। मैं नहीं समझता कि जो आतंकवादी बंदूकें लेकर आये थे या आत्महत्या की तैयारी करके आये थे और जिन्होंने उनको भेजा था, उन्होंने इस सवाल को गहराई से नहीं सोचा होगा। उन्होंने सोच-समझ करयह खतरनाक कदम उठाया है। यह एक चुनौती है और इस चुनौती का सारे देश को सामना करना होगा।

इस चर्चा में जो भाषण हुए हैं, उसके लिए मैं माननीय सदस्यों को बधाई देता हूं। श्री शिवराज पाटिल ने एक रचनात्मक भाव से अपनी बातें कहीं, लेकिन उनके भाषण से एक बात का मैं उल्लेख करना चाहूंगा, सदस्यों ने भी उसको सुना था। श्री पाटिल के शब्दों को मैं उद्धृत कर रहा हूं:

> "महोदय, इस सदन की सुरक्षा बढ़ाने के लिए जब पहले कुछ कदम उठाये गये थे तो हम लोगों ने उसका विरोध किया, ऐसा विरोध नहीं होना चाहिए। आज हमें कम से कम यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि ऐसा विरोध नहीं होना चाहिए। इस सदन की सुरक्षा का जो प्लान बनाया गया था, उस पर पूरी तरह से एक्शन नहीं हुआ है।"

यह बड़ी खुशी की बात है कि स्पीकर साहब ने आज सुबह बैठक में कहा कि जो कुछ भी जम्मू कश्मीर में हुआ, उसके बाद उन्होंने एक कमेटी एपाइण्ट की है, वह कमेटी रिपोर्ट देने जा रही है, उस पर अमल किया जायेगा और इस सदन को सुरक्षा दी जायेगी। कठिनाइयां थीं, अभी भी रुकावटें हैं।

मध्याह्न 12.00 बजे

अभी देश को असुरक्षा के वातावरण में किस तरह से व्यवहार करना, किस तरह से अपनी बात कहना, इसका पूरा अभ्यास नहीं हुआ है। शायद इसका कारण हमारा जीवन की ओर देखने का दृष्टिकोण है। एक दिन मरना तो है ही, इस जीवन को बचाने के लिए सौ उपाय करने की क्या आवश्यकता है। लेकिन यह दृष्टिकोण सही नहीं है। एक-एक जान की कीमत है। आतंकवादी एक भय पैदा करना चाहते हैं अपने मंसूबों को पूरा करने के लिए। हमें उन मंसूबों को विफल करना है। सुरक्षा के लिए जो भी कदम उठाये जाते हैं, उनका दृढ़ता से पालन होना चाहिए। इस प्रश्न पर लगातार आपस में चर्चा होती रहे, पक्ष और विपक्ष के बीच में नहीं, देश की सर्वोच्च संस्था के प्रतिनिधि के रूप में, पार्टी की रेखाओं को मिटा कर। सुरक्षा का सवाल सर्वोपरि है। लेकिन सदन और संसद की सुरक्षा के साथ-साथ देश की सुरक्षा का सवाल भी

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

जुड़ा हुआ है। एक संकट है और संकट जिन्होंने पैदा किया है, वे एक खतरनाक खेल खेल रहे हैं।

अब हमें उपदेश दिए जा रहे हैं कि हम संयम से काम लें। हमने कब संयम से काम नहीं लिया है। सचमुच में हमारे संयम को हमारी दुर्बलता समझा गया। हमारा देश लोकतंत्र है। जन भावनाओं का ध्यान रखना जरूरी है। उसके साथ क्या उचित है, क्या उचित नहीं है, इसका विवेक भी आवश्यक है। कोई देश में लड़ाई का जोर पैदा नहीं कर रहा है, करना भी नहीं चाहिए। युद्ध और शांति के फैसले उत्तेजना में नहीं होते। समग्र परिस्थिति पर विचार करके, सब उपायों को काम में लाते हुए, जो-जो विकल्प हैं, उन सबका विवेचन करते हुए जो नीति बनेगी, वह सारे देश के हितों को ध्यान में रख कर बनेगी। उसमें सबका सहयोग लिया जायेगा। ऐसा निर्णय पार्टी अकेले नहीं कर सकती है। वह देश का निर्णय होगा।

मैं बधाई देता हूं कांग्रेस के सदस्यों को। मैंने प्रियरंजन दासमुंशी जी का भाषण सुना। मैंने और भी भाषण सुने। सरकार के पक्ष को उमर अब्दुल्ला ने बड़े प्रभावी ढंग से रखा। सचमुच में जो भी कदम उठाया जाएगा, वह राष्ट्र के हितों को सर्वोपरि रख कर उठाया जाएगा। मुलायम सिंह जी को इस संबध में किसी तरह की गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। लेकिन हम आतंकवाद की चर्चा करते हुए सारे मसले पर चुनाव को हावी हो जाने दें, यह ठीक नहीं है। चुनाव होंगे, समय पर होंगे। देश में जो लोकतंत्र है, वह हमारी सबसे बड़ी पूंजी है, हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। इसीलिए संसद को निशाना बनाया गया है।

सोची-समझी साजिश के अनुसार, यह आशा की गई थी कि यह देश टूट जायेगा, बिखर जायेगा। पाकिस्तान में कुछ ऐसे तत्व हैं जो पुराने इतिहास की बात करते हैं और सारे देश पर, सारे हिन्दुस्तान पर झंडा फहराने की घोषणाएं करते हैं। एक बार जब देश का बंटवारा हो गया, हमने उसे स्वीकार कर लिया।

जब मैं लाहौर गया था और मीनार-ए-पाकिस्तान पर मुझे जाने का अवसर मिला तो मुझे सलाह दी गई थी कि मैं न जाऊं लेकिन मैंने कहा कि नहीं, यह गलत बात होगी। मैं उस पर गया और मैंने कहा कि हमें एक ऐसा पड़ौसी चाहिए जो उन्नति करे, जो विकास करे और जो शक्तिशाली हो। कभी-कभी दुर्बलतम में से ही दुस्साहस पैदा होने की भावना होती है। पाकिस्तान इस मनोवस्था से ग्रसित है कि भारत ने देश के बंटवारे को स्वीकार नहीं किया। यह गलत है। जनरल मुशर्रफ से भी मैंने कहा था कि हमारे लिए वह अध्याय बंद हो गया लेकिन यह बताइए कि आपने देश के बंटवारे को स्वीकार किया है या नहीं? बंटवारा दुर्भाग्यपूर्ण था मगर हो गया। हम उसके विरोधी थे। आज हम उस पर अमल कर रहे हैं क्योंकि वह राष्ट्र की नीति बन गई है। पाकिस्तान में इस तरह के तत्व सक्रिय हैं और पाकिस्तान की सरकार भी जानती है और हम भी जानते हैं। इसीलिए इस कांड के बाद हमने पाकिस्तान से कहा है कि जो आतंकवादी संगठन इस दुस्साहस के कार्य में शामिल हैं, जिन्होंने इसका संगठन किया, योजना बनाई है, उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। हम उम्मीद करते हैं कि कार्रवाई होगी लेकिन हम केवल कूटनीतिक तरीके पर भरोसा करके नहीं बैठे हैं, विश्व के जनमत को भी बना रहे हैं, जैसा सुझाव दिया गया है और इस सवाल पर जनमत हमारे साथ हैं, यह आत्मविश्वास, भरोसा हमें होना चाहिए। इस बीच में कई देशों की मैंने यात्राएं की हैं। भारत की ओर दुनिया एक भरोसे की नजर से देख रही है। भारत का लोकतंत्र एक वर्द्धमान लोक तंत्र है। भारत चुनौतियों का सामना कर सकता है, इसकी अनुभूति बढ़ रही है लेकिन आतंकवाद का मुकाबला हमें अपने बल पर करना पड़ेगा, अपनी शक्ति से करना पड़ेगा। हमारी स्थिति के बारे में संसार के सभी देशों को परिचित किया गया है। वे स्वीकार करते हैं कि आपको आत्म-रक्षा के लिए कदम उठाने का पूरा अधिकार है, इजाजत है लेकिन फिर कहते हैं कि जरा सोच-समझकर करिए। हम सारे कदम सोच-समझकर ही उठा रहे हैं। भविष्य में भी जो कदम उठाएंगे, उन्हें पूरी तरह से सोच-समझकर, उनके हर पहलू पर विचार करके उठाएंगे लेकिन हमें संयम का उपदेश देने वाले जरा हमारे पड़ौसी से भी बात करें, पड़ौसी से पूछें कि उनका खेल कब तक चलेगा?

उन्हें पड़ोसी की आवश्यकता है, तो पड़ोसी की आवश्यकताओं में एक आवश्यकता यह है कि आतंकवाद को समाप्त करना होगा। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय गठबंधन हुआ है। दुनिया के अधिकांश राष्ट्र उसमें शामिल हैं। भारत में जो आतंकवाद हो रहा है, उसके लिए किस प्रमाण की जरूरत है संसद भवन पर लगी हुई गोलियों के रंग, संसद भवन के बाहर आतंकवादियों की पड़ी हुई लाशें, उनके पाकिस्तानी होने का सत्य, यह अपने में सबूत है। अपने में प्रमाण हैं। मिलकर जांच करने का सवाल ही पैदा नहीं होता। हमारे राष्ट्र की सुरक्षा और राष्ट्र की सर्वप्रभुता को चुनौती दी गई है। हम इसका सामना करेंगे और हम आशा करते हैं कि विश्व के जितने सजग राष्ट्र हैं, उनका हमें समर्थन मिलेगा। हम किसी से यह आशा नहीं करते कि हमारी तरफ से लड़े, हम किसी से यह आशा नहीं करते कि वे हमारे पक्ष में मैदान में कूद पड़ें। हमने पहले भी कहा था और फिर दोहरा रहा हूं कि आतंकवाद का खात्मा हम अपने बल पर करेंगे। लेकिन दुनिया के और देशों को भी तय करना है कि आतंकवाद अलग-अलग नहीं हो सकता है। उसकी परिभाषा अलग-अलग नहीं हो सकती है। आतंकवाद

को टुकड़ों में नहीं बांटा जा सकता है। एक देश में आतंकवाद का एक रूप है और दूसरे देश में किसी और तरह का, ऐसा नहीं माना जा सकता है। आतंकवाद की समाप्ति के लिए विश्व में अभियान चल रहा है। जो कुछ उस दिन हुआ, वह आतंकवाद का खुला प्रदर्शन है। हम विश्वास करते हैं कि अन्य देश इस संबंध में हमारी भावनाओं को समझेंगे और हमें अपना समर्थन देंगे। आतंकवाद से हम पहले भी लड़ चुके हैं। पंजाब में हम आतंकवाद पर विजय भी प्राप्त कर चुके हैं। एक ऐसी परिस्थिति थी कि पंजाब के भविष्य के बारे में आशंकायें हो रही थीं। एक ऐसी स्थिति पैदा हुई थी कि देश की एकता खतरे में पड़ जाएगी, देश की अखण्डता खतरे में पड़ जाएगी। इस तरह की आशंकायें जग गई थीं। लेकिन दृढ़ता से कदम उठाये गये और आतंकवाद को कुचला गया। आज पंजाब में शांति है, भाई-चारा है। पंजाब के लोग इसके लिए बधाई के पात्र हैं। आतंकवाद से हम निपटना जानते हैं और निपटेंगे। लेकिन इस मौके पर दुनिया के देश भी कसौटी पर कसे जा रहे हैं। उनकी कथनी में और उनकी करनी में कितना अंतर है, यह भी उजागर हो रहा है। मापदंड अलग-अलग नहीं हो सकते हैं। आतंकवाद मापने का मापदंड एक ही होगा।

भारत एक लोकतंत्रवादी देश है। बहुदलीय लोकतंत्र हमारे यहां हैं। मैं जब विदेश में गया और मैंने विदेशी मेहमानों को बताया कि अफगानिस्तान से हमारा बहुत पुराना संबंध है। विदेश मंत्री के नाते में दो बार अफगानिस्तान गया था। हमने वहां अस्पताल शुरू किया है। हम और सहायता देने के लिए तैयारी कर रहे हैं।

तालिबान के आने के बाद सब परिस्थितियों को एक माध्यम में बदल दिया गया, लोग शोक में डूब गए। इसलिए तालिबान को समाप्त करने के लिए जो कदम उठाए गए हैं, उनका हम समर्थन कर रहे हैं। लेकिन जिन्होंने भारत की संसद पर हमला किया है, अनेक माननीय सदस्यों ने इसकी भलीभांति विवेचना की कि उस दिन पता नहीं क्या हो जाता। आतंकवाद से लड़ने के लिए जो तैयारियां की गई हैं, वह भी एक बड़ा कारण था। आतंकवादी जो चाहते थे, वह पूरा नहीं हुआ। उन तैयारियों को हम अनदेखा न करें, कमियों की ओर इशारा करें। किस तरह से कमियां दूर की जाएं, इसके लिए सुझाव आमंत्रित हैं, लेकिन यह प्रश्न पक्ष और विपक्ष का नहीं है। देश में शांति और भाईचारा रहे, जो परिस्थिति पैदा हुई है, उसे लेकर कोई उसका लाभ उठाए, इस समय अगर कोई भी संगठन या दल वैमनस्य पैदा करने की बात करता है, सम्प्रदायों के बीच में भेदभाव बढ़ाता है तो वह देश का अहित करता है। इस तरह की कार्रवाइयां बर्दाश्त नहीं होंगी। लोग सद्बुद्धि से काम लेगें, इसकी हम आशा करते हैं। यह परीक्षा का काल है। शायद उस दिन हम लोग इसलिए बच गए कि आने वाले काल में हम अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकें। मुझे विश्वास है कि जिस वातावरण में सदन में चर्चा चल रही है, वह इस वातावरण को और भी बलशाली करेगा। सारी दुनिया, सारे देश हमारी ओर देख रहे हैं। दलगत राजनीति चलेगी, वह तो अपनी जगह है, लेकिन इस देश की विशेषता है कि जब-जब संकट की घड़ी आती है तो सारा देश मतभेद भुला कर एक हो जाता है और जो भी खतरा पैदा होता है उसका मिलकर सामना करता है।

महोदय, मैं जब प्रतिपक्ष में था तो मैंने बंगलादेश की आजादी के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी को जो बधाई दी थी। वह मेरी भावनाएं नहीं थीं बल्कि हम सब लोगों की भावनाएं थीं। हमने बहुत संयम दिखाया। अब हम कूटनीतिक तरीके से समस्या को हल करने का प्रयास कर रहे हैं, और भी विकल्प खड़े हुए हैं, उनके बारे में सोच-समझ कर फैसला किया जाएगा। मुझे विश्वास है कि सदन इस संबंध में सरकार का समर्थन करेगा, हमारी नीतियों का समर्थन करेगा।

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर): अध्यक्ष महोदय, 13 दिसम्बर को हिन्दुस्तान की संसद पर जो आतंकवादी हमला हुआ है, उससे हिन्दुस्तान की डेमोक्रेसी के ऊपर आघात पहुंचा है। मैं अपनी पार्टी की तरफ से उसकी घोर निन्दा करता हूं।

जिन सुरक्षा-कर्मियों और वाच एंड वार्ड के लोगों ने अपने जीवन को हिन्दुस्तान की संसद की गरिमा की रक्षा के लिए बलिदान किया, उन सभी को मै श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मैं एक बात साफ-साफ कहना चाहता हूं कि जब आतंकवादी संसद भवन के अन्दर पहुंच गये और सरकार की तरफ से बयान आता है कि सुरक्षा प्रबंध ठीक थे तो मेरा सरकार से पूछना है कि अगर सुरक्षा में कमियां नहीं होतीं तो हमारे सुरक्षा कर्मियों ने आतंकवादियों को गेट नम्बर एक पर क्यों नहीं रोका। इससे हमें जानकारी मिलती है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था में कमियां थीं। मैं इसके बारे में एक-दो बातें कहना चाहता हूं। इस समय संसद की जो सुरक्षा है उसको शीघ्र ही बढ़ाया जाना चाहिए। राष्ट्रपति भवन, सुप्रीम कोर्ट, नॉर्थ-ब्लॉक, साउथ-ब्लॉक की सुरक्षा भी और सख्त होनी चाहिए। जो आतंकवादी हैं वे हमारे देश से बाहर के आतंकवादी हैं इसलिए हिन्दुस्तान की जनता को, आम जनता को और सब राजनैतिक दलों को मिलकर आतंकवाद का मुकाबला करना चाहिए और इस विषय में ठोस कदम सरकार को उठाना चाहिए।